आत्मा और परमात्मा का प्यारा सम्बन्ध

मेरी उम्र 18 साल है। मैंने शारीरिक रूप से जीवन का लंबा सफर तय नहीं किया है और न ही जीवन में आने वाले अनेकानेक अनुभवों की सच्चाइयाँ मेरे पास हैं। मैंने अक्सर उम्रदराज लोगों को कहते सुना है कि तुम अभी क्या जानो, या फिर कहते हैं, हमने ऐसे ही धूप में बाल सफेद नहीं किये हैं। उनकी बात सत्य है परंतु जीवन के छोटे-से अंतराल में मैंने जो अनुभव अपने या दूसरों के जीवन को देखकर पाये हैं, वे भी अधिकांशत: मनुष्य जीवन की सच्चाइयाँ हैं।

प्राचीन समय से ही मनुष्य के लिये तीन मूलभूत आवश्यकताएँ – रोटी, कपड़ा और मकान निर्धारित की गई हैं। तब से लेकर आज तक इन आवश्यकताओं को स्थूल रूप में मनुष्य जुटाने में रत है। परंतु कटु सत्य यह है कि मानव को आज एक दूसरी भूख भी परेशान कर रही है। रोटी की जगह, वह जीवन में सुख-शांति की भूख से त्रस्त है। इस भूख को न धन, न वैभवों और न पदार्थों से मिटाया जा सकता है। उसके तन पर कपड़ा तो है जो उसे गर्मी, सर्दी, पानी, धूल से सुरक्षित रख सकता है परंतु परिस्थितियों की विपरीत तूफानी हवाओं से बचाने वाला कोई कपड़ा उसके पास नहीं है। मकान रूपी छत्रछाया तो उसे मिल जाती है परंतु जीवन के हर मोड़ पर, सही मार्ग-दर्शन करने वाली छत्रछाया, चिंता रहित रख सकने वाली छत्रछाया का तो नितांत अभाव है ही। कारण यह है कि शांति का स्रोत, हर परिस्थिति से बचाने वाला तथा जीवन में छत्रछाया बनकर साथ चलने वाला भगवान के सिवाय अन्य कोई हो ही नहीं सकता। परंतु फिर भी जन्म-जन्मांतर के अविनाशी संबंधी परमात्मा से हम कितने अलग हैं, इस बात को शायद विचारते न हों। साथ ही आधुनिक समाज में भगवान, ईश्वर, अल्लाह, गॉड के बारे में नई-नई परिभाषाएँ गढ़ दी गई हैं। विद्यार्थी जीवन में एक बार मैंने अपने शिक्षक से भगवान के बारे में पूछा तो उन्होंने समझाया कि भगवान न कोई शक्ति है, न ही इस संसार को चलाने वाली कोई सत्ता है। वो मनुष्य की कल्पना है जिसे दु:ख या परिस्थिति में दिल की हर बात सुनाकर संतुष्टता या तसल्ली प्राप्त कर ली जाती है। वो मनुष्य की कल्पनाओं में, बचपन से लेकर बुढ़ापे तक फैली हुई एक प्रभावशाली सत्ता है। उनका यह जवाब वास्तविकता के रिंचक मात्र भी नजदीक नहीं है। भगवान का होना, यही परम सत्य है और भगवान को जानना ही परम ज्ञान है। मनुष्य दु:ख के समय तो भगवान को हर बात सुनाता है और समस्या के चले जाने पर भूल जाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए तो भगवान कल्पना ही है परंतु वास्तव में भगवान कल्पना नहीं, शाश्वत सत्ता है, एक ऐसा सहारा है जो हर पल, हर परिस्थिति में साथ निभाता है। उसके साथ के बगैर मनुष्य सृष्टि कल्पना हो सकती है। हर जन्म में विनाशी शरीर के संबंधी तो बदल जाते हैं लेकिन परमात्मा से तो आत्मा का जन्म-जन्मांतर का संबंध है। आज के भौतिक युग की भाग-दौड़ में हम उसे याद करने के लिये समय भले ही न निकालें लेकिन वो हर पल, अपने हर बच्चे की तरफ निहार रहा है। हमें भी विश्वास है कि वो हमें देख रहा है तब तो हम भी कष्ट के समय भगवान को याद करते हैं और उसकी मदद का भी

अनुभव करते हैं। परमात्मा अविनाशी संबंधी है, इस संबंध को अनुभव करने की बहुत आवश्यकता है।

भगवान से संबंध मजबूत करने की आवश्यकता – शास्त्रों में कितने ही गायन हैं कि समस्याओं से घिरे भक्त को भगवान ने ही आकर बचाया। महाभारत में दो प्रकार की मित्रता के दृष्टांत आते हैं। एक तरफ द्रुपद और द्रोणाचार्य की मित्रता और दूसरी तरफ श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता। बचपन में तो दोनों मित्रता बहुत श्रेष्ठ थीं लेकिन बड़े होने पर द्रुपद और श्रीकृष्ण तो राजा बन गये और द्रोणाचार्य व सुदामा अत्यंत गरीब हो गये। जब सुदामा श्री कृष्ण के पास मदद लेने गये तो श्री कृष्ण ने अपने अश्रुओं से पग धोकर उन्हें बेहद सम्मान और अखुट धन दिया। दूसरी ओर, द्रुपद के पास जब द्रोणाचार्य पहुँचे तो उन्हें अत्यधिक अपमानित होकर लौटना पड़ा। अन्तर यही था कि सुदामा की मित्रता भगवान से थी जबकि द्रोणाचार्य की इंसान से। हम यह नहीं कह सकते कि हर मनुष्य द्रुपद की तरह ही व्यवहार करेगा लेकिन कई बार स्थिति ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति चाहकर भी मदद नहीं कर सकता। एक भगवान ही है जो हर स्थिति-परिस्थिति में सदा साथ रह सकता है। उसका साथ ही हमें जीवन की सही दिशा की ओर ले जा सकता है।

भगवान से संबंध मजबूत कैसे करें – परमात्मा से हम आत्माओं का अविनाशी संबंध है। वे हमारे लिये बाँहें पसारे खड़े हैं। हमें उन तक अपने कदम बढ़ाने की ज़रूरत है। **वो कदम है भगवान की श्रेष्ठ मत अर्थात् श्रीमत का। दुनिया में भी किसी संबंध को जोड़ने व मजबूत करने के लिए दो चीजें आवश्यक हैं – प्रेम और त्याग। हमारी भगवान से इतनी दिल की प्रीत हो कि हमें उसकी याद न भूले अर्थात् वो हमारे हर पल साथ रहे। दूसरी बात, दुनिया में भी प्रत्येक संबंध के पीछे कुछ-न-कुछ त्याग अवश्य किया जाता है तो क्या भगवान की श्रीमत पर चलने के लिए केवल विकारों और बुराइयों का थोड़ा-सा त्याग नहीं कर सकते? यह त्याग हमारे कई जन्मों का भाग्य बना देगा।** हम भगवान को बुद्धि द्वारा कसकर पकड़ें जो कोई भी परिस्थिति हमारा साथ न तोड़ सके और वो हमारी कल्पनाओं में न रहकर प्रैक्टिकल स्वरूप में रहे। ❑